1. पौधा संरक्षण

क. रोगकीट ख. रोग

क. रोगकीट

नारियल ताड़ के मुख्य रोगकीट हैं गैंडा भृंग, लाल ताड़ घुन, कृष्ण शीर्ष इल्ली, कॉकचैफर सूँडियाँ और कोरीड बग आदि। यथा समय आवश्यक उपयुक्त निवारण उपाय अपनाएं। निम्न तालिका में इसके प्रमुख रोगलक्षण और नियंत्रण उपाय दिए हैं।

1. गैंडा भृंग
2. लाल ताड़ घुन
3. कृष्ण शीर्ष इल्ली
4. कोरीड बग
5. चूहा
6. लेस बग
7. मिली बग और स्केल कीट
8. दीमक
9. सफेद ग्रब
10. नारियल का एरियोफाइड बरूथी
11. स्लग इल्ली

---

1. गैंडा भृंग

रोग लक्षण

वयस्क भृंग न खुले पर्णांग एवं शूकीछद को छेद कर प्रवेश करते हैं। प्रकोपित पर्णांग जब खुलते हैं तो उसमें ज्यामितीय कट दिखाई देते हैं।

नियंत्रण उपाय

बीटल हुक का प्रयोग करके भृंग को निकाल कर मार दें।

रोगनिरोधी उपाय के रूप में अप्रैल, सितंबर और दिसंबर में तीन बार सबसे ऊपर का तीन पर्णकक्ष सेविडोल 8 जी (25ग्राम) + बारीक रेत 200 ग्राम के मिश्रण से भर दें।

या

1.5 ग्राम नैफ्तलीन गोलियाँ रेत के साथ मिश्रित करके पर्ण कक्षों में भरें।

45 दिनों में एक बार इसका प्रयोग करें।

भृंग के प्रजनन क्षेत्रों में 0.01 प्रतिशत कार्बरिल(50 डब्ल्यू पी) छिड़कने से लार्वा का नाश कर सकता है।

बैकुलोवाइरस ओरिक्टस का प्रयोग करके भी इसका जैविक नियंत्रण किया जा सकता है(10-15 वाइरस 1 हेक्टर के रोगग्रस्त क्षेत्रों में छोड़ दें)।

और

हरा मसकार्डिन फफूँदी, मेटारैजियम एनिसोफिले (250 मि.लि. मेटारैजियम कल्चर+750 मि.लि पानी मिलाकर खाद गड्ढ़ों में और भृंगों के प्रजनन स्थानों में छिडक दें)

स्वच्छ खेती करें

2. लाल ताड़ घुन

रोगलक्षण

तने पर छेद, चिपचिपा भूरा द्रव बाहर निकलना और छिद्रों से रेशे का बाहर निकलना आदि।

फीडिंग ग्रब द्वारा निकालने वाली आवाज़ भी कभी कभी सुनाई देती है।

रोगाक्रमण के चरम अवस्था में पत्ते का आंतरिक भाग पीला पड़ने लगता है।

जब ताड़ मर जाता है तो शिखर नीचे गिरता है या सूख जाता है।

नियंत्रण उपाय

बाग के रोगग्रस्त ताड़ों को काटकर और सड़े हुए तना निकाल कर स्वच्छ खेती करें। ऐसे ताड़ों को चीरकर खोलें और विभिन्न अवस्थावाले कीटों को जला दें।

तने पर घाव न लगें क्यों कि यदि घाव हो तो कीट उसमें अंडा डाल देता है। यदि कोई घाव हो तो उसको कार्बरिल/थियोडन और मिट्टी के मिश्रण से चिपका दें। पत्तों को काटते समय कम से कम 1 मी का पर्णवृन्त बरकरार रखें।

भृंगों को आकर्षित करने के लिए फेरोमोन जाल का प्रयोग करें और उसे मार दें।
यदि गैंडा भृंग का प्रकोप शुरू हो गया है तो निम्नलिखित उपाय अपनाएं
यदि पत्ता सड़न/कलिका विगलन पाया जाय तो उसमें फंगिसाइड्स का प्रयोग करें क्योंकि ऐसे ताडों पर भृंग अंडा डालता है।
रोगग्रस्त ताडों पर 0.1 प्रतिशत एन्डोसल्फान (3 मि.लि./लिटर पानी) या 1 प्रतिशत कार्बरिल(20 ग्राम/लिटर) इंजेक्ट करें। क्षतिग्रस्त क्षेत्रों में छेदों को बंद करें और इन छेदों के ऊपर बनाए गए छेदों में से फनल का प्रयोग करके कीटनाशी उँडेल दें। फिर इस छेद को भी बंद करें । यदि आवश्यक हो तो एक हफ्ते बाद फिर से दोहराएं।

---

3. कृष्णशीर्ष इल्ली

रोगलक्षण

जनवरी से मई के दौरान प्रकोप अधिक पाए जाते हैं। ये इल्लियाँ पत्ते के निचले प्रतल का हरा पदार्थ खाते हैं और रेशमी और फ्रैस गैलरियों में रहते हैं। कठोर प्रकोप में पत्ते का सारा हरा पदार्थ खा जाते हैं।

नियंत्रण उपाय

इस रोगकीट के खिलाफ जैविक नियंत्रण सबसे प्रभावी है। गोरियोज़स नेफैन्टिडिस, एलैसमस नेफैन्टिडिस और ब्रैकिमेरिया नोसाटोई जैसे परजीव्याभों को विमोचित करके इस पर काबू पा सकता है।

यदि प्रकोप अधिक कठोर हो तो रोगग्रस्त पत्तों को निकाल दें और उसे जलाकर नष्ट कर दें। फिर पत्ते के निचले प्रतल पर 0.02 प्रतिशल डाइक्लोरवस (डाइक्लोरवस 100 ई सी) छिड़क दें।

---

4. कोरीड बग

रोगलक्षण

रोगप्रकोपित बुताम विकसित नहीं होते हैं जिससे अपक्व फल जल्दी गिर जाते हैं। यदि फल बढ़ता है तो भी वो बंध्याफल होता है।

नियंत्रणोपाय

यदि रोगबाधा अधिक हो तो कीटनाशी का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। वर्ष में 3 बार छिड़काव करना होता है। मादा फूलों के ग्रहणशील चरण के बाद पुष्पक्रम पर 0.1 प्रतिशत कार्बरिल या एन्डोसल्फान छिड़क दें। यदि दोपहर के बाद छिडकाव करें तो परागण करने वाले कीटों के नाश से बच सकता है। 2.5 ग्राम फोरेट से भरे छेदित पोलिबैग(2 बैग/ताड़) पुष्पक्रम के डण्ठल पर बाँधने से भी इस पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

---

5. चूहा

रोगलक्षण

डाब फलों पर आक्रमण करते हैं जिससे जल्दी फल गिर जाते हैं।

नियंत्रणोपाय

भूमी के स्तर से 2 मीटर ऊँचाई तक 40 सें.मी. आकार के जी आई शीट का मेकैनिकल बैरियर लगाने से धड़ तक चूहे का पहुँचना रोका जा सकता है।

चूहे को पकड़ने के जाल का प्रयोग करें।

ज़िंक फोसफाइड या वारफरिन का प्रयोग करके ज़हर संतापन करें।

अल्यूमिनियम फोसफाइड गोलियों का प्रयोग करके इनके छिपने के स्थानों को धूमित करें।

प्रति हेक्टर 30 ब्लॉक की दर पर (प्रत्येक का भार 10 ग्राम) 5 ताड़ों पर ब्रोमोडायोलिन ज़हर ब्लॉक लगा दें। 12 दिनों के बाद दोहराएं। चूहों की आबादी कम करने के लिए यह प्रणाली अपनाते रहें।

---

6. लेस बग

रोगलक्षण

नारियल के पर्णसमूह से रस चूस लेता है, यह जड़मुर्झा रोगग्रस्त ताड़ों से स्वस्थ ताड़ों की ओर फाइटोप्लास्मा अंतरित करने के कारक के रूप में कार्य करता है।

नियंत्रणोपाय

0.01 प्रतिशत एन्डोसल्फान या मोनोक्रोटोफोस छिड़काने से इस पर नियंत्रण पाया जा सकता है।